>

Title: Need to set up a Central Sanskrit University at Rewa, Madhya Pradesh.

श्री चन्द्रमणि त्रिपाठी (रीवा): भारतीय प्राचीन इतिहास, धर्म, संस्कृति, राजनीति, दर्शन एवं समस्त ज्ञान विज्ञान के मूल ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। वे उपनिषद, षड दर्शन, अष्टादश पुराण, आयुर्वेद, ज्योतिष, व्याकरण एवं खगोल शास्त्र आदि के ज्ञान संस्कृत भाषा में ही हैं, जो प्राच्य पद्धति की संस्कृत शिक्षा के अध्ययन के बिना असंभव है, लेकिन इसको मध्य प्रदेश में सुनियोजित तरीके से समाप्त किया जा रहा है।

पूर्व में मध्य प्रदेश के समस्त संस्कृत महाविद्यालय एवं विद्यालय डा.संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी (उ.प्र.) से संबद्ध थे, किन्तु वर्ष १९८५ सें ये अ वधेष प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश से संबद्ध कर दिए गए। रीवा विश्व विद्यालय को इसके लिए न तो कोई अनुदान मिला और न ही इसके लिए अ लग से कोई व्यवस्था। इससे प्राच्य पद्धति की संस्कृत शिक्षा का शनैः-शनैः पतन होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में मध्य प्रदेश में एक केन्द्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय अथवा संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना नितान्त आवश्यक है।

मध्य प्रदेश में आज संस्कृत शिक्षा की स्थिति यह है कि वर्तमान ८ संस्कृत महाविद्यालयों से शास्त्री और आचार्य की कक्षाएं समाप्त कर उनका स्तर उच्चतर माध्यमिक स्तर तक करने की योजना प्रदेश सरकार आगामी सत्र से कर रही है। संस्कृत महाविद्यालयों में संस्कृत उपाधिधारी प्राचार्यों के स्थान पर गैरसंस्कृत उ पाधिधारी प्राचार्य बनाए गए, जिनसे संस्कृत भाषा के उन्नयन एवं संवर्धन की कल्पना करना ही व्यर्थ है। संस्कृत शिक्षा से छात्रों को हतोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रदेश में संस्कृत शिक्षकों के कई हजार स्वीकृत पद वर्षों से भरे नहीं गए। इसके कारण संस्कृत भाषा के अध्येताओं की संख्या में निरन्तर कमी हो रही है। इन सब परिस्थितियों पर गौर करते हुए केन्द्र सरकार से साग्रह अनुरोध है कि मूर्धन्य साहित्यकार बाण भट्ट की जन्मस्थली रीवा क्षेत्र में एक केन्द्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय या संस्कृत विद्यापीठ की स्थापना करने की तुरन्त कार्रवाई करें। रीवा और उसके आसपास कई संस्कृत महाविद्यालय स्थित हैं और रीवा के संस्कृत के विद्वानों के द्वारा भूमि एवं भवन देने की पेशकश की जा चुकी है।